



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

मि एग्लुनसुं कड ¼-फ'क एडि ए फोकु ½ ह्जिर एडि ए फोकु फोह्ख] इक्

फुनसुं कड] एडि ए द्दंङ्ग न्गिक्नु

0"क%27 val%100 cy/sVu vof/l%19 & 23 fnl Ecj] 2018 fnu%exyokj fnukd%18 fnl Ecj] 2018

एडि ए इवङ्गकु

भारत सरकार के iFoh foKku ea-ky; द्वारा वित्त पोषित एवं H्जिर एडि ए फोकु फोह्ख द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत j'k'Vt, एडि ए इवङ्गकु द्दंङ्ग H्जिर एडि ए फोकु फोह्ख] एडि ए Hou] ubZfnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा एडि ए द्दंङ्ग न्गिक्नु द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा m/ke fl g uxj ea vxys ikp fnukd में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

इवङ्गकु एडि ए र0	एडि ए इवङ्गकु & m/ke fl g uxj				
	19/12/2018	20/12/2018	21/12/2018	22/12/2018	23/12/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	23	23	23
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	4	4	5	5	5
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	35	35	35	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	006	006	006
वायु की दिशा	उत्तर-उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	पश्चिम-उत्तर-पश्चिम	पश्चिम-उत्तर-पश्चिम

खल0th cYyH iUr df'k ,oa iK k'xd fo'ofok|ky;] iUruxj flFkr df'k एडि ए फोकु osk kkyk (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (11 – 17 दिसम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कहीं-कहीं आंशिक बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 19.0 से 24.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.1 से 8.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 91 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 47 से 63 प्रतिशत एवं हवा 1.1 से 2.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः उत्तर एवं पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf'k ek e ijle'kZ

Ql y çcUk%

- ❖ सरसों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ जौ की पछेती दशा में बुवाई हेतु संस्तुत किस्में— ज्योति, प्रीति, मंजुला, जागृति का चुनाव करें। प्रति हैक्टेयर 100–110 कि0ग्रा0 बीज का उपयोग करें। 18–20 से0मी0 के कतारों में बुवाई करें। बुवाई दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।
- समय से बोए गए गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद आवश्यकतानुसार प्रथम सिंचाई करें। प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद जब खेत चलने लायक हो जाए तब बचे हुए नाइट्रोजन की आधी मात्रा का टॉपड्रेसिंग अपराहन में करना अधिक प्रभावी होता है।
- गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई—गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई—गुड़ाई बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45–50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही है साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते है।
- समय से बोए गई चनें की फसल में दो बार निराई—गुड़ाई करें। पहली बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरा पहली सिंचाई के बाद बुवाई के 45–50 दिन बाद करें।

m|ku çcUk%

- ❖ गुजिया कीट को पेड़ पर चढ़ने से रोकने के लिए इस माह के अंतिम सप्ताह में पेड़ के तने पर चारों ओर भूमि से लगभग 40से0मी0 ऊपर मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी पॉलीथीन की 25 से0मी0 चौड़ी पट्टी लपेट कर उसके दोनों तरफ सुतली से बाँधना चाहिए। साथ ही नीचे के भाग में ग्रीस का लेप लगा लेना चाहिए।
- ❖ गुजिया कीट नियंत्रण माह के अंतिम दिनों में 250 ग्राम क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत चूर्ण) प्रत्येक पेड़ की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई कर मिट्टी में मिलायें।
- ❖ छाल खाने वाले कीड़े एवं तना वेदक कीड़ों के नियंत्रण के लिए पहले जालो एवं छेदों को साफ कर देते हैं, फिर छिद्रों में 0.05 प्रतिशत डाइक्लोरोवास का घोल डाल कर इसे बंद कर दें। इनका प्रकोप साल में एक ही बार होता है। यदि प्रकोप होन पर तुरन्त रोकथाम कर ली जाय तो ये हाति नहीं पहुँचा सकते।
- ❖ आम मे फोमा ब्लाइट के नियंत्रण के लिए आवश्यकता पड़ने पर 0.3 प्रतिशत कॉपर आक्सीक्लोराइड (3.0ग्राम/लीटर) का छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ बागों की गहरी जुताई करे, जिससे मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाले वाले कीट की वे अवस्थाएँ जो जमीन में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती हैं, नष्ट हो जाये।
- ❖ आलू एवं टमाटर की फसल में पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैन्कोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैगन के मुझाने की अवस्था मे कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। यदि पूरा पौधा सूख रहा हो तो इसी घोल से जड़ों की सिंचाई करें।
- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें।
- ❖ गोभी वर्गीय सब्जियों में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

Ikqkyu izUk%

- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय—भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।
- ❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।

- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ-सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस-पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1-4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते हैं। इसे पटेरा रोग भी कहते हैं। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते हैं। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10-15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10-15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकित्सक की सलाह से दवा दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते हैं, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

MO vkj0 d0 fl g
 i k; ki d , oafk l ky ukMy vf/kdjh
 xeh k df'k ek e l ok
 xksc- iUr df'k , oai k s fo' ofo | ky; | iUruxj